नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

'इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य : प्रवृत्तियां और संभावनाएं' विषय पर हिंदी विश्वविद्यालय की ओर से त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

वर्धा, 11 फरवरी 2019: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र और कालीकट विश्वविद्यालय, केरल के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य : प्रवृत्तियां और संभावनाएं' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी कालीकट विश्विद्यालय में 7 से 9 फरवरी को सम्पन्न हुई। संगोष्ठी का उदघाटन कालीकट विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर मुहम्मद के. बशीर ने किया। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित विद्वानों को संबोधित करते हुए राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हिंदी के महत्व को रेखांकित किया और कहा कि कालीकट विश्वविद्यालय में होने वाली इस संगोष्ठी से हिंदी साहित्य की प्रगति जाँचने का मौका प्राप्त हुआ है। संगोष्ठी के बीज वक्तव्य के लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर जी.गोपीनाथन

उपस्थित थे। उन्होंने विस्तार से विषय की चर्चा करते हुए वर्तमान सदी के हिंदी साहित्य में विभिन्न विमर्शों जैसे स्त्री विमर्श,दलित विमर्श, पर्यावरण विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि को स्पष्ट करते हुए हिंदी के अनूदित साहित्य पर भी प्रकाश डाला और संतोष व्यक्त किया कि हिंदी साहित्य की दिशा ठीक है। वह अपनी परंपरा का सम्यक विकास कर रहा है। संगोष्ठी के उदघाटन के अवसर पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्रजी ने संदेश भेजा था जिसे कृष्ण कुमार सिंह ने पढा। कुलपतिजी ने अपने संदेश में संगोष्ठी की सफ़लता के लिए शुभकामनाएं देते हुए यह इच्छा व्यक्त की कि इसके माध्यम से हिंदी साहित्य की वर्तमान सदी की दशा और दिशा के संबंध में सम्यक विचार विमर्श होगा और इससे प्राप्त निष्कर्ष मूल्यवान सिद्ध होंगे। सत्र में साहित्य विद्यापीठ की डीन प्रो. प्रीति सागर, कार्यकारी कुलसचिव प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने शुभकामनाएं दी। स्वागत भाषण प्रोफेसर आर.सेतुनाथ ने किया। धन्यवाद संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर अखिलेश कुमार दुबे ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कालीकट विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर सुब्रमण्यम वी.के. ने की। संगोष्ठी में कविता,कहानी,नाटक,उपन्यास, विमर्श केंद्रित साहित्य और आलोचना,निबंध एवं अन्य विधाओं पर केंद्रित

छह अकादमिक सत्र सम्पन्न हुए जिसमें दक्षिण भारत के विभिन्न विश्विद्यालयों ,महाविद्यालयों के विद्वान प्राध्यापक,विद्यार्थी,शोधार्थी और पूर्वोत्तर प्रदेशों,महाराष्ट्र और देश के अन्य क्षेत्रों से भी हिंदी स्नेही जन सम्मिलित थे। इनमें प्रमुख रूप से प्रोफेसर तंकमणि अम्मा, प्रोफेसर सुधा बालकृष्णन, प्रो. रवींद्र नाथ(गोवा),प्रो. अवधेश कुमार(महाराष्ट्र), डॉ अशोक नाथ त्रिपाठी, प्रो. करुणा शंकर उपाध्याय, मुम्बई, प्रो. रामप्रकाश तिरुपति,प्रो. जयशंकर,प्रो.ए. अच्युतन,प्रो. के.अजिता, प्रोफेसर सुनीता मंजन बेल, प्रोफेसर प्रतिभा मुदलियार ,डॉ रूपेश कुमार सिंह,सुधीर ठाकुर आदि मौजूद थे। कार्यक्रम के स्थानीय समन्वयक प्रोफेसर प्रमोद कोवप्रत थे।कालीकट विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यापक हरमन,फातिमा मार्गरेट, सहला, अन्य विद्यार्थियों का विशेष सहयोग मिला।

संगोष्ठी का समापन 9 फरवरी को हुआ। मुख्य अतिथि प्रोफेसर गोपीनाथन,अध्यक्ष सेतुनाथ थे। इस अवसर पर प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, प्रो. प्रीति सागर उपस्थित थे। स्वागत वक्तव्य प्रो. अखिलेश दुबे ने दिया तथा आभार प्रो. प्रमोद कोवप्रत ने माना। संचालन सुश्री रेवती ने किया। संगोष्ठी में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के एम.ए. अंतिम वर्ष के विद्यार्थी भी उपस्थित थे।